

स्वामी विवेकानंद का जीवन के प्रति दृष्टिकोण

सारांश

‘आशा जीवन है, निराशा मृत्यु’ का शंखनाद करने वाले स्वामी विवेकानंद ने जीवन का हर दिशा का गहराई से अवलोकन किया। मनुष्य की आन्तरिक दिव्यता ही स्वामी जी का मूलभूत संदेश था। विवेकानंद जी के प्रकाशित ‘विवेकानंद साहित्य’ में केन्द्रीय संदेश यही है। स्वामी जी के शब्दों में “मेरा आदर्श अवश्य ही कुछ शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है और वह है—मानव जाति को उसके दिव्य स्वरूप का आदेश देना और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अभिव्यक्त करने का उपाय बताना।” उनका निम्नलिखित प्रसिद्ध उद्धरण जीवन के प्रति दृष्टिकोण में हमारा मूलमंत्र बन सकता है— ‘प्रत्येक जीव अव्यक्त ब्रह्म है। बाह्य तथा आन्तरिक प्रकृति को वशीभूत करके अपने अर्न्तनिहित देवत्व को प्रकट करना ही जीवन का लक्ष्य है।”

मुख्य शब्द : व्याख्यान, देवत्व, दृष्टिकोण, इच्छाशक्ति, सकारात्मकता, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, दिव्यता।

विजय सराफ

व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय पी.जी.महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान

प्रस्तावना

स्वामी जी लोगों में अर्न्तनिहित दिव्यता और चेतना जाग्रत करने में कभी थकते नहीं थे। वे हर व्यक्ति के जीवन में दिव्यता अभिव्यक्त होते देखना चाहते थे। क्योंकि दिव्यता की अभिव्यक्ति को वे मानवीय सभ्यता का एकमात्र पैमाना मानते थे।

जीवन में सफलता के स्रोत के रूप में उन्होंने कहा कि ‘सुबह की नींद इन्सान के इरादों को कमजोर करती है, मंजिलो को हासिल करने वाले कभी देर तक नहीं सोया करते –। वो लोग आगे बढ़ते हैं जो सूरज को जगाते हैं। वो पीछे रह जाते हैं जिनको सूरज जगाता है।”

व्यक्ति को अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिये व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। जो किसी एक चीज से नहीं बनता। कुछ विशेष नियम एवं उपाय है जिनसे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को सबल, जीवन को सार्थक बना सकता है:—

इच्छा शक्ति को सबल बनाना

इच्छा शक्ति को सबल बनाने के लिये व्यक्ति को अपने बुरे विचार, अपनी कमजोर मनोवृत्तियों पर नियंत्रण करके उच्च विचार और अच्छी मनोवृत्तियों से तादात्म्य रखना होगा। तभी मन पर नियंत्रण और संयम को अपनाकर आप अपनी मंजिल को हासिल कर सकते हैं।

अपने—आप पर विश्वास

स्वामी अर्न्तनिहित दिव्यता के लिये आत्मविश्वास को व्यक्तित्व का मूल आधार मानते थे। इस आत्मविश्वास के बाद ही ईश्वर में विश्वास का स्थान आता है।

सकारात्मक विचार

स्वामी जी ने मनुष्यों की दुर्बलता का स्पष्ट शब्दों में तिरस्कार किया। उन्होंने कहा कि आन्तरिक दिव्यता के लिये बौद्धिक

Anthology : The Research

विचारों की आवश्यकता है। इसके लिये सत्कार्य करते रहो, सर्वदा पवित्र चिन्तन करो। बुरे संस्कारों को रोकने का यही एक उपाय है।

असफलता तथा भूलों के प्रति दृष्टिकोण

असंख्य प्रयासों के बाद भी कोई असफल होता है तो स्वामी जी उसे एक बार पुनः प्रयास करने की सलाह देते हैं। वे निष्क्रियता के स्थान पर गलतियाँ करके उससे सीखने को अधिक प्रशंसनीय मानते थे।

आत्मनिर्भरता

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। स्वामी जी मानते हैं कि हम अपनी वर्तमान अवस्था के लिये स्वयं ही जिम्मेदार हैं। और भविष्य में जो कुछ होना चाहे उसकी शक्ति भी हमीं में है।

त्याग और सेवा

निष्काम सेवा मनुष्य जीवन की सार्थक्ता हेतु एक प्रमुख साधन है। इसके साथ ही स्वार्थ और कर्मफलों की इच्छा को त्यागकर अपने जीवन में गति लायें तो बाकी कुछ अपने साथ ही ठीक हो जायेगा। इस आत्मसंयम से महान इच्छा शक्ति का प्रार्दुभाव होता है। ये सब केवल प्रेम की भावना से ही संभव है।

शक्ति जीवन है दुर्बलता मृत्यु

शक्ति ही वह वस्तु है जिसकी जीवन में हमें जरूरत है। जिसे हम दुःख या पाप मानते हैं, वह हमारी दुर्बलता है। दुर्बलता अज्ञान का और अज्ञान दुःख का जनक है। अतः हमें बलवान बनना है। स्वामी का विचार है गीता को पढ़ने की अपेक्षा वॉलीबाल खेलना पहले ज्यादा श्रेष्ठ है क्योंकि जब आप तन्दुस्त होंगे तो बलवान शरीर

और मजबूत इरादों से गीता ज्यादा अच्छे से समझ पाओगे।

जो अंध विश्वास तुम्हारे मन में है उसे भगा दो। साहस के साथ उठो। सत्य को जानो और तब तक मत रूको जब तक कि मंजिल तक न पहुंच जाओ।

स्वामी जी कहते हैं कि “तुम स्वयं को और प्रत्येक व्यक्ति को उसके सच्चे स्वरूप की शिक्षा दो और घोरतम मोहनिद्रा में पड़ी हुई जीवात्मा को इस नींद से जगा दो। जब तुम्हारी जीवात्मा प्रबुद्ध होकर सक्रिय हो उठेगी, तब तुममें स्वयं ही शक्ति आयेगी, महिमा आयेगी, साधुता आयेगी और पवित्रता भी स्वयं चली आयेगी – तात्पर्य यह है कि जितने अच्छे गुण हैं वे सभी तुम्हारे भीतर आ जायेगे।”

निष्कर्ष

इस प्रकार स्वामी ने एक प्रेरणास्रोत बन जीवन के प्रति निर्भीकता का संदेश दिया है और इसीलिये उनका यह कथन सटीक बैठता है कि :-‘आशा ही जीवन है और निराशा मृत्यु।’

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. विवेकानंद साहित्य (अद्वैत आश्रम) कलकत्ता से प्रकाशित
2. प्रेम योग – स्वामी विवेकानंद अनुवादक स्व. द्वारकानाथ तिवारी, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
3. ज्ञानयोग – स्वामी विवेकानंद अनुवादक श्री ब्रह्मेन्द्र शर्मा।
4. राजयोग – स्वामी विवेकानंद पं.सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला रामकृष्ण मठ, नागपुर।
5. प्रेरक प्रसंग, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर (राज.)